9. सामाजिक चेतन

इस अवधि की प्रमुख विशेषता है कि किशोर युवक और युवतियाँ सामाजिक रूप से चेतना ग्रहण कर लेते हैं। समाज में वे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं तथा ऐसा प्रयास भी करते हैं। वे माता-पिता व अन्य लोगों की ओर से प्रशंसा एवं स्वीकृति की अपेक्षा करते हैं। सामाजिक कार्यों में भी भाग लेना शुरू कर देते हैं। किशोरों को सामाजिक तरीकों का ज्ञान होने लगता है।

10. स्वतंत्रता की भावना

किशोरावस्था में बालक स्वयं को स्वतंत्र पसंद करते हैं। उनकी हर गतिविधि में स्वतंत्रता की भावना प्रदर्शित होती है। बड़ों के नियंत्रण से स्वयं को मुक्त रखना चाहता है। दूसरे शब्दों में वह स्वयं को बड़ा समझने लगता है।

11. समाज सेवा की भावना

किशोरावस्था के दौरान बालक में समाज सेवा बड़ी प्रबल होती है। वे आदर्श समाज की कल्पना में डूबे रहते हैं तथा वे यह लक्ष्य समाज की कुरीतियों को दूर करके प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहते हैं।

12. व्यवसाय का चयन

किशोर अधिकतर अपने भविष्य के प्रति अधिक सजग और चिन्तित रहते हैं। अपने भविष्य को ध्यान में रखकर वे किसी व्यवसाय का चयन करने की सोचते हैं। क्योंकि उचित व्यवहार के चयन पर ही उनका भविष्य और समाज में स्थान निर्भर करता है। उनका सामाजिक सम्मान भी इसी व्यवसाय पर निर्भर करता है।

13. जीवन दर्शन का निर्माण

किशोरावस्था का बालक एवं बालिका बहुत आदर्श होते हैं। वे अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित के प्रति अधिक सजग होते हैं। इसीलिये वे आदर्शवादी कहलाते हैं। इन आदर्शों के आधार पर वे जीवन दर्शन का निर्माण करते हैं तथा उसी दर्शन के सहारे वे अपना जीवन बिताते हैं।

14. धार्मिक कार्यों में रुचि

किशोरावस्था में पहुंचते-पहुंचते किशोरों का धार्मिक कार्यों के प्रति झुकाव होने लगता है। उनकी धर्म के प्रति आस्था निर्मित होने लगती है। वे ईश्वर के अस्तित्व के बारे में पूछताछ आरम्भ कर देते हैं। मोक्ष के बारे में उनकी जिज्ञासा तीव्र होने लगती है।

15. माता-पिता से मतभेद

इस आयु में किशोरों में अपने माता-पिता से मतभेद उभरने लगते हैं। ये मतभेद किसी न किसी रूप में उभरते हैं। ऐसे में यदि अभिभावक उनकी स्वतंत्रता का हनन करके उन्हें अपने दृष्टिकोण के अनुसार चलने के लिये कहते हैं तो वे विद्रोही बन जाते हैं।

16. कुछ अन्य विकास

उपरोक्त विकास के अतिरिक्त किशोरों में कुछ और भी सामाजिक विकास होते हैं, जैसे—वे अपने दृष्टिकोणों के अनुसार, रुचियों के अनुसार तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के अनुसार स्थाई मित्रता स्थापित करने का प्रयास करते हैं, उनकी रुचि पार्टियों और उत्सवों में अधिक होने लगती है, वे अधिक बातूनी हो जाते हैं तथा उनके कई प्रकार के प्रिय कार्य विकसित हो जाते हैं।